ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

miegkfun'kd ¼—f"k ekl e foKku½] Hkkjr ekl e foKku foHkkx] iq.k   fun'kd] ekl e dUn] ngjknu

o"k% 27	vad% 93	cqyfVu vof/k% 23 & 27 uoEcj] 2018	fnu% cgLifrokj	fnukad% 22 uoEcj] 2018

ekl e iokZuqeku%

भारत सरकार के iFoh foKku ea=ky; द्वारा वित्त पोषित एवं Hkkjr ekl e foKku foHkkx द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत jk"Vh; ekl e iokZuqeku dUnz] Hkkjr ekl e foKku foHkkx] ekl e Hkou] ubZ fnYyh द्वारा पूर्वानुमानित तथा ekl e dUæ] ngjknu द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा m/ke flag uxj eq vxys ikp fnuks में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

iokZuqekfur ekl e rRo	ekl e iokZuqeku & m/ke flag uxj				
	23/11/2018	24/11/2018	25/11/2018	26/11/2018	27/11/2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	28	27	27	27	28
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	11	12	12	11	12
बादल आच्छादन	बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	90	85	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	40	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	006	008	006	004
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

xkfoUn cYyHk iUr d`f"k ,oa ikS|kfxd fo'ofo|ky;] iUruxj fLFkr d`f"k ekl e foKku o/k'kkyk (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (15 – 21 नवम्बर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही आंशिक बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 25.0 से 27.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 8.0 से 14.4 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 90 से 98 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 50 से 73 प्रतिशत एवं हवा 1.2 से 3.3 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम एवं पूर्व–दक्षिण–पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

Ñf"k ekSle ijke'kZ

Qly çcU/k

- पेड़ी गन्ना के रस में ब्रिक्स की मात्रा जाचते रहें। जब ब्रिक्स की मात्रा 18 प्रतिशत हो जाय तब नवम्बर माह में मिल से पर्ची आते ही सर्वप्रथम गन्ने की कटाई कर गन्ना मिल में भेजे तथा खाली हुए खेत की तैयारी कर रबी फसलों की समय से बुवाई करें।
- नौलख फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- शरदकालीन गन्ने में बुवाई के 25–30 दिन पर निराई–गुड़ाई करें। आवश्यकतानुसार बुवाई के 30–40 दिन बाद सिंचाई करें। तथा बोए गए सह फसलों में सस्य कियाए करें।
- सिंचित दशा में चने की सामान्य बुवाई नवम्बर के दूसरे पखवाड़े में पूरी कर लें।
- चना की उन्नतशील प्रजातियों –पूसा 256, के0–850, अवरोधी, पंत जी–114, पंत जी–186, पंत काबुली चना–1 आदि की बुवाई सिंचित दशा में 45 से0मी0 की दूरी पर बने लाईनों मे 6–8 से0मी0 गहराई पर करें। बुवाई से पूर्व स्वयं उत्पादित बीजों को बीज जनित रोगों से बचाव हेतु सर्वप्रथम 1 ग्राम कार्बेडाजिम तथा 2 ग्राम थायरम के मिश्रण से शोधित करें। इसके उपरान्त राइजोबियम कल्चर एवं फास्फोरस घोलक कल्चर से भी उपचारित करें। बुवाई हेतु बीज दर छोटे एवं मध्यम आकार के बीज वाली प्रजातियों के 60–80 कि0ग्रा0/है0 तथा मोटे दाने वाली प्रजातियों के लिए बीज दर 80–100 कि0ग्रा0/है0 रखें। बुवाई से पूर्व खेत में 15–20 कि0ग्रा0 नत्रजन, 40–50 कि0ग्रा0 फास्फोरस तथा 20–30 कि0ग्रा0 पोटाश /है0 प्रयोग करें।
- गेहूँ की बुवाई के समय औसत तापमान 22°C से 23° C होना चाहिए। इस क्षेत्र में यह तापमान 15 नवम्बर के आस–पास आता है। समय से पूर्व बुवाई करने पर बालियाँ छोटी होती है।
- फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।
- गेहॅू के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2 ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।

m|ku çcU/k

- ❖ मूली की बुवाई वर्षभर चलती है। यूरोपियन प्रजातियों हेतु 6–8 किग्रा बीज तथा एशियन प्रजातियों हेतु 10–12 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ मूली के बीज बोने से पहले खेत में गोबर की खाद (सड़ी हुई) का प्रयोग करें। मृदा जांच के अनुसार उर्वरकों का प्रयोग करें। कतार की दूरी 20–25 सेमी रखें तथा बीज बोने पर अंकुरण होने पर अनावश्यक पौधों को उखाड़कर अलगकर पौधों से पौधो की दूरी 8–10 सेमी सुनिश्चित करें।
- ❖ लहसुन की फसल में निराई गुड़ाई एवं सिचाई करें।
- ❖ पछेती गोभी की पौध तैयार हो चुकी है तो उसकी रोपाई इस माह कर सकते है जिसके लिए सामान्य भूमि में 150 किग्रा नत्रजन, 80 किग्रा फॉस्फोरस व 60 किग्रा पोटाश की संस्तुति की जाती है। जिसमे से आधी नत्रजन एवं सम्पूर्ण फॉस्फोरस व पोटाश खेत की अंतिम जुताई के समय डालें।
- ❖ गोंद निकाले की दशा में कॉपर आक्सी क्लोराइड तथा बुझे हुए चूने का पौधों के मुख्य तने पर जहाँ से गोंद निकल रहा हों का लेप करें।
- ❖ पत्तियों पर अगर ऐन्थ्राक्नोज का प्रकोप हो तो कॉपर आक्सी क्लोराइड का 2 ग्राम/ली0 के हिसाब से छिड़काव करें।
- ❖ अगर बगीचों की सफाई व जुताई न हुई हो तो इसे शीघ्रातीशीघ्र पूर्ण करें।
- ❖ स्टैम कैंकर या काई कवक अगर तनों पर दिखें तो कॉपर आक्सीक्लोराइड या बीड़ों मिक्सर का छिड़काव करें।

- ❖ जाला कीट का प्रकोप होने की दशा में जाला साफ करने वाले यंत्र से सफाई करें तथा क्लीनालफॉस 2 मि0ली0 / ली0 के हिसाब से छिड़काव करें।

Ikskikyu icU/ku

- ❖ जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- ❖ खुरपका मुखपका के लक्षण– आँखें लाल होना, तेज बुखार होना (105–107°थ), उत्पादन तथा आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी होना, मुहँ में छाले होना,लार गिरना समय से उपचार न मिलने की दषा में पशु के खुरों में घाँव बनना जिसकी वजह से पशुओं का लंगड़ाकर चलना आदि लक्षणों के आधार पर मुखपका खुरपका रोग की पहचान की जा सकती है। रोग के लक्षण पता चलते ही रोगी पशुओं को अन्य स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग कर दें। निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करायें तथा स्वस्थ पशुओं को चारा देने के उपरांत ही अंत में पीड़ित पशुओं को मुलायम हरा चारा दें। तदुपरांत हाथों को लाल दवा से अच्छी तरह साफ करें।
- ❖ इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ / पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- ❖ नवजात पशु की नाल को नए ब्लेड से काटकर उसमें गांठ लगा दें तथा उस पर बीटाडीन या टिंचर लगाना न भूलें।
- ❖ मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोशिश हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पशुचिकितसक की सलाह से दवा दें।
- ❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

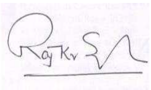

Mk0 vkj0 d0 flag
ik/;kid ,oa fIkkflIkky ukMy vf/kdkjh
xkeh.k df"k ekle lokj
xk-c- iUr df"k ,oa iks|ks- fo’ofo|ky;] iUruxj